

der folgenden Wörter in Betracht nimmt, als die abgeleitete; im lat. *vibrare* finden wir einen ähnlichen Uebergang der Bedeutungen.

— अत्र 1) *nehmen*. — 2) *geben* MAITR. im DHĀTUP. — 3) *leuchten*, glänzen Vop. edend.

2. विष् (= 1. विष्) f. SIDDH. K. 247, b, pen. Decl. Vop. 3, 164. 1) *heftige Aufregung, Ungestüm, Wuth; Bestürzung*, = व्यवसाय und जिगीषा H. an. 1, 16. VIḤVA im ÇKDR. वि यदक्कुर्यं विषो विश्वे देवसो अक्रमुः RV. 8, 82, 14. तत्र विषो जनिमवेजत यो रजद्रूमिर्भियसा स्वस्य मन्योः 4, 17, 2. मृक्याग्रामो न यामनुत विषा 10, 78, 7. मा नः सोम सं वीविज्ञो मा वि बीभिषया राजन् । मा नो हार्दो विषा वधीः 8, 68, 8. ते मे के चित्र ताव य उमा आसन्दृशि विषे 5, 32, 12. विषः संवृक्त्रवे दत्तस्य ते (भक्त्यामि) VS. 38, 28. — 2) *Strahl, Licht; überh. Glanz, Pracht, Schönheit* AK. 1, 1, 35. 3, 4, 2, 19. 29, 227. H. 100. H. an. MED. तिग्मा अग्ने तत्र विषः RV. 8, 43, 3. स्वां विदधत्विषं दिनपतिः RĀGA-TAR. 3, 492. रुचिधाम्नि (d. i. सूर्ये) — परलोकमभ्युपगते विविषुः । ज्वलनं विषः ÇIC. 9, 13. निशीयदीपाः सक्तसा कृतविषः RAḠ. 3, 15. 4, 75. श्रोतयती दिशस्त्रिषा R. 3, 4, 8. MBH. 1, 6613. कपरज्ञकुण्डलविषा BHĀG. P. 8, 18, 2. न कौ दानवपुरं कृताविषं कृतेश्वरम् AṆG. 10, 65. MBH. 3, 778. कृतविट्म् — उर्योधनस्य शिविरम् 9, 3463. *Glanz, Ansehen der Person*: मरुत्वत्म् — लच्छ्रवसा कृतविषम् BHĀG. P. 4, 19, 28. — 3) *glänzende Farbe*: नीलात्पलसम<sup>०</sup> SUÇR. 2, 335, 12. VARĀH. BṚH. S. 31, 21. वैहर्य<sup>०</sup> 63, 3. कृत्रे तुहिनविषि KATHĀS. 18, 71. कनक<sup>०</sup> H. 49. — 4) *Rede* (vgl. u. विषीमत् und विष, wo diese adj. mit वाच् und वचस् verbunden werden) H. an. MED. — Vgl. अचल<sup>०</sup>, वात<sup>०</sup>.

विषा (von 1. विष्) f. 1) *Licht, Glanz* ÇABDAR. im ÇKDR. — 2) N. pr. einer Tochter KAÇJAPA'S VĀJU- und LĪŅGA-P. in VP. 82, N. 2.

विषामीश (विषाम्, gen. pl. von 2. विष्, + इश) m. *der Herr der Lichtstrahlen, die Sonne* H. 97, Sch.

विषापति (विषाम् + पति) m. dass. AK. 1, 1, 3, 32.

विषि (von 1. विष्) f. 1) *Ungestüm, leidenschaftlicher Trieb; Energie, innere Kraft*: सा नो भूमिस्त्रिषिं वलं राष्ट्रं दधात्तमे AV. 12, 1, 8. सुत इति पवित्र आ विषिं दधानं शोडसा RV. 9, 39, 3. विषिः सा ते त्रिविषाणास्य नाधुषे 5, 8, 5. सिंहे व्याघ्र उत या पदकौ विषिर्यौ ब्राह्मणे सूर्ये या । इन्द्रं या देवी सुभगा ज्ञानं सा न रेतु वचसा संविदाना ॥ AV. 6, 38, 1. fgg. यैव स्रपे विषिस्तामेवावर्हन्धे TS. 5, 2, 9, 6. Neben तेजस् AV. 10, 6, 27. neben ब्रह्मवर्चस TS. 2, 1, 2, 9. इन्द्रय VS. 28, 40. 19, 92. — 21, 53. — 2) *Glanz, Licht, Strahl; überh. Ansehnlichkeit, Pracht, Schönheit* NIN. 1, 17. H. 100. अथि विषीरथित सूर्यस्य RV. 9, 71, 9. कृष्णा तमसि विष्या जघान 10, 89, 2. स्वायो देवो डंक्षितरि विषिं धात् 1, 71, 5. सोमस्य विषिरसि तवैव मे विषिभूयात् VS. 10, 5, 20, 5. Neben यशस् AV. 12, 5, 8. विषि, अपचिति, यशस्, ब्रह्मवर्चस, अत्राय ÇAT. BR. 14, 2, 10. 12, 7, 4, 6. 2, 15, 5, 4, 1, 11. PAÑĀV. BR. 28, 18.

विषिमत् (von विषि) und विषीमत् (im Veda stets diese Form) adj. 1) *heftig erregt, ungestüm; energisch*: अथा चन अदधति विषीमत् इन्द्राय वज्रं निघनिघने वधम् RV. 1, 53, 5. 2, 22, 2. विषीमत् संशितं मा कपोतु AV. 12, 1, 21. विषीमानस्मि जूतिमानवान्यान्कृन्मि दोधतः 38. सेने वैषि विषीमती 4, 19, 2. नमो राज्ञे वरुणाय विषीमते 6, 20, 2. Rudra VS. 16, 17. वार्षं पर्जन्यश्चित्रा वदति विषीमतीम् RV. 5, 63, 6. — 2) *stimmernend; prächtig, ansehnlich*: पित्रे चिञ्चक्रुः सदनं समस्मै मङ्कि विषीम-

त्सुकतो वि हि ब्यन् RV. 3, 31, 12. (मरुतः) विषीमतो अघ्नस्यैव दिव्युत् 6, 66, 10. Agni KAUC. 4. — ÇAT. BR. 14, 2, 7, 11. ÇĀÑKH. ÇA. 14, 34, 3. KĀTJ. ÇA. 3, 3, 5.

विष्ये (von 1. विष्) adj. 1) *ungestüm, heftig; hehr, ehrfurchtgebietend; erschütternd, furchterregend*; öfters neben अमवत् und उग्र. विषासो अग्रमवतो अचर्यः RV. 1, 36, 20. 4, 6, 10. उग्रं वचो अयावधीत्वेषं वचो अयावधीत् VS. 5, 8. आ विषमुग्रमव इमहे वयम् RV. 3, 26, 5. नत्रममवत्वेषम् 5, 34, 9. राजस्त्रिष्यस्य सुभगास्य 8, 4, 19. Häufiges Epitheton von Rudra, den Marut und ihrem Thun: सत्यं विषा अमवतो धन्वं चिदा रुद्रियासः । मिहं कृणवत्यवाताम् RV. 1, 38, 7. 114, 4. 2, 30, 8. 14. 8, 20, 7. विषं गणं माहृतम् 5, 53, 10. 56, 9. 58, 2. 6, 48, 15. 8, 20, 3. शवस् 5, 87, 6. 6, 48, 21. Indra-VARUṆA VĀLAKH. 9, 5. आ विषं वर्तते तमः VS. 34, 32. विषमित्था समरणं शिमीवतोः RV. 1, 135, 2. व्यद्रिणा पतय विषमणवम् 168, 6. तामि देवास्त्रिषं चतुर्दिरे चोद्यन्मति dich Agni machten die Götter zu einem hehren zur Andacht stimmenden Anblick 5, 8, 6. त्रप 1, 98, 8. 114, 5. 9, 71, 8. यस्या (सरस्वत्याः) अनतो अक्रुतस्त्रिषश्चरि चुरणवः । अमशरति रोहवत् 6, 61, 8. नामन् (des Vishnu) 7, 100, 3. अश्रमिहो रयप्रो विषमिन्द्रं न सत्यतिम् 8, 63, 10. रय 10, 60, 2. 1, 66, 6(3). 70, 11(6). गावः 9, 41, 1. ऋषभ AV. 9, 4, 1. तस्य वज्रः क्रन्दति स्मत्स्वर्षा दिवो न विषो रवयः शिमीवान् RV. 1, 100, 13. — 2) *funkelnd, schimmernd*: अस्य विषा अज्ञरो तस्य भानवः सुसंशः RV. 1, 143, 3. विषः स भानुरणवो नृचतोः 3, 22, 2. विषस्ते धूम ऋषवति 6, 2, 6. 2, 9, 1.

विष्येय (wie eben) m. *das Toben. Ungestüm*: प्रूरस्येव विषयादीपते वयः RV. 1, 141, 8.

विष्युम्न (विष + यु<sup>०</sup>) adj. *dessen Kraft ungestüm ist*: शर्धाय घृष्ये विष्युम्नाय शुधिमणे (मरुताम्) RV. 1, 37, 4.

विष्यन्मणा (विष + न<sup>०</sup>) adj. *dessen Muth heftig —, gereizt ist*: पतौ जज्ञ उग्रस्त्रिषन्मणाः RV. 10, 120, 1. कथं महे अमुरायाववीरिह कथं पित्रे कर्ये विष्यन्मणाः AV. 5, 11, 1.

विष्यप्रतीक (विष + प्र<sup>०</sup>) adj. *funkelndes Aussehen habend*: अस्तुर्न दिव्युत्विषप्रतीका RV. 1, 66, 7(4). आ सूर्येव विधतो रथं गात्रिषप्रतीका नर्मसो नेत्या 167, 5.

विष्ययाम (विष + याम) adj. *dessen Lauf ungestüm ist*, von den Marut: पत्रिषयामा नृदयत्त पर्वतान् RV. 1, 166, 5.

विष्यरथ (विष + रथ) adj. *dessen Wagen heftig dahinführt*. von den Marut RV. 5, 61, 13.

विष्यस (von 1. विष्) n. *das Anregen, Antrieb*: अस्पेडं विषसा रत्त सिन्धवः परि यद्वज्रेण सोमयच्छत् RV. 1, 61, 11. Nach SĀJ. = दीतिन बलेन.

विष्यसद्रूप (विष + सं<sup>०</sup>) adj. *von hehrem Aussehen*, von den Marut: राजान इव विषसंशो नरः RV. 1, 55, 8. 5, 57, 5. Indra 6, 22, 9. 10, 60, 1.

विष्यत (1. व oder वा + इषित) adj. *von dir geheissen* RV. 8, 63, 10.

विष्य (von 1. विष्) adj. *erschütternd, furchterregend*: सस्वश्चिद्वि समृतिस्त्रिष्यैवामपीद्येनं सक्तसा सक्तते (मरुतः) RV. 7, 60, 10. ज्ञनूश्चिदो मरुतस्त्रिष्यैण भीमासस्तुविमन्यवो ज्यासः euer Entstehen schon ist durch den Furchtbaren (nach SĀJ. = दीतिन रुद्रेण) 38, 2. Es liesse sich aber auch als n. fassen: unter erschütternden Erscheinungen.

वै zusammengesogen aus तु वै; s. u. वै.

विषीरथि m. patron. des Kuçika RV. ANUKA. bei SĀJ. zu RV. 1, 10.